TEACHER'S NAME: SHIVI SINHA

COLLEGE: VAISHALI MAHILA COLLEGE

DESIGNATION: ASSISTANT PROFESSOR (GUEST)

CLASS TEACHING IN: B.A. PART-II (HONOURS)

PAPER TEACHING: PAPER-IV

SUBJECT'S NAME: HISTORY OF WESTERN PHILOSOPHY

Scanned with CamScanner

B.A.-II (HONOURS) PAPER - IV

TEACHER'S NAME: SHWETA SINHA
VAISHALI MAHILA COLLEGE

History Of Western Philosophy

TOPIC - KANT - GENERAL INTRODUCTION

विषय - कांट - सामान्य परिचय

परिचय :

कान्ट एक बहुत ही महत्वपूर्ण आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिक हैं। उनके दर्शन में हमें बुद्धिवाद और अनुभववाद का एक अनोखा सामन्जस्य देखने को मिलता है। बुद्धिवाद कहता है की 'बुद्धि' ही ज्ञान का एक-मात्र साधन है और अनुभववाद कहता है की, हमारा सम्पूर्ण ज्ञान, हमारे इन्द्रियानुभव पर आधारित होते हैं। परन्तु दोनों ही एकांगी सिद्धान्त साबित हो जाते हैं। बुद्धि, अनुभव के बिना, ज्ञान नहीं दे सकता और अनुभव, बुद्धि के बिना, ज्ञान की सत्यता को प्रमाणित नहीं कर पाता है। कांट वह पहले दार्शनिक थे जिन्होंने यह बतलाया की सत्य ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनुभव और बुद्धि का होना आवश्यक है।

इसके अलावा कान्ट में हम एक प्रकार की क्रांति का अनुभव करते हैं, जो उनसे पूर्व आए हुए दार्शनिकों में नज़र नहीं आ पाता है। उनका दृष्टिकोण पूर्णतः किसी भी अंधविश्वास से हटकर वैज्ञानिक है।

वह न सिर्फ आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिक थे, बल्कि वह आवश्यक रूप से एक नैतिक, धर्मशास्त्री तथा प्राकृतिक वैज्ञानिक भी थे।

यह उन्ही के विचार थे, जिन्होंने आधुनिक पाश्चात्य दार्शनिक दर्शन को एक नया रूप प्रदान किया। कान्ट के दर्शन को आमतौर पर 'समिक्षावाद' का सिद्धान्त कहते हैं। जिसका कोई इतिहास नहीं है। यह सिद्धांत एक व्यक्ति का है और वह व्यक्ति और कोई नहीं स्वयं कांट है।

चूँकि वे एक जर्मन दार्शनिक थे, इसलिए हम उनके दर्शन में जर्मन विचारधारा की परिपूर्णता, गहराई और अस्पष्ट शब्दावली का प्रयोग साफ तौर पर मिलता है। अतः इस प्रकार कान्ट एक बेहद ही महत्वपूर्ण दार्शनिक होने का किरदार निभाते हैं।

आगे हम देखेंगे की कान्ट के दर्शन के महत्वपूर्ण पहलू क्या है? उनके दर्शन की समस्या क्या है? और उन्होंने क्या समाधान दिया उस समस्या का?

Scanned with CamScanner